

क्षमापना दिवस के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका

सम्पादक मण्डल :

- डॉ. नरेन्द्र भानावत
- श्री सुधीन्द्र गेमावत
- श्री सुनील मुणोत
- श्रीमती सन्तोष पटवा
- श्री प्रवीण लोढ़ा
- श्री उत्तमचन्द चपलावत



विज्ञापन मण्डल :

- श्री कृष्णकान्त मेहता
- श्री जयकुमार लोढा
- श्री सुरेन्द्र कुमार जैन
- श्री फतेहसिंह बरडिया
- श्री सुशीलचन्द सिंघी
- श्री सुरेन्द्र कुमार जैन (C.A.)
- श्री मिलाप चन्द जैन
- श्री सुनील [illegible]
- श्री स्नेह कुमार भण्डारी
- श्री आनन्द चोरडिया
- श्रीमती मंजु पगलिया

प्रकाशक :

श्री जैन श्वेताम्बर संघ (संस्था)

[illegible] के पास

जवाहर नगर जयपुर-302 004 (राज.)

1992



विकास सराहनीय

धर्म लाभ। सह विदित हो कि आपका पत्र मिला। समाचार जाने।

महावीर साधना केन्द्र से विभिन्न जैन सम्प्रदाय एकता के सूत्र में आगे बढ़ रहे हैं। वर्तमान समय में आपके श्री संघ ने जो विकास किया है। सराहनीय है।

अपनी 2 साधना करते हुए भी यदि संगठन को मजबूत करें, मिल-जुल कर अहिंसा, अनेकान्त और अपरिग्रह का प्रचार हो तो जैन धर्म की जय-जयकार हो सकती है।

आचार्य विजय इन्द्रदिन्न सूरि

अनेकान्त दर्शन का साक्षात् प्रतिबिम्ब

तीर्थंकर परमात्मा महावीर प्रभु ने सरलता, सहजता व कषाय-मुक्ति को ही मोक्ष का साधन बताया है। बाह्य क्रियाएं आभ्यन्तर की शुद्धि का उपाय है। उनका यही उद्देश्य है– कषायों का सर्वथा विनाश हो! कषाय-भावों की उपस्थिति में क्रिया-समाधन अर्थात् परिणाम प्रदान नहीं करता।

यह बात विचित्र लगती है— जब हम महावीर प्रभु के शासन में रहने वाले ही बाह्य क्रियाओं को लेकर कषाय-भावों का उपार्जन करते हैं। अनेक पंथों, गच्छों, सम्प्रदायों में बंटा वीर-शासन अनेकान्त का उपदेश देता-2 स्वयं उसके आचरण से सर्वथा विमुख हो गया है। ऊपर से एकता के जोशीले नारे लगाने वाला श्रमण-वर्ग भी अन्दर में गच्छ-सम्प्रदाय की चिंगारी फैलाकर असहिष्णुता का निर्माण करता है। यह अत्यन्त दुःखद परिस्थिति है। ऐसी विषमता में जवाहरनगर का जैन श्वे. संघ एक सुखद सत्य बनकर उभरा है, जहां किसी भी पंथ / गच्छ सम्प्रदाय का दुराग्रह नहीं है। जिसे जिस मान्यता/आचरण में रुचि हो वह उस प्रकार की आराधना अनुष्ठान करने में स्वतन्त्र है, पर बैठो सब एक साथ! प्रभु महावीर के अनेकान्त दर्शन का यह साक्षात् प्रतिबिम्ब है। मंदिर के परिसर में बनी दादावाड़ी की प्रतिष्ठा के समय सबने इस सत्य के साक्षात् दर्शन किये थे।

[illegible]

[illegible]

जैन समाज के लिये आदर्श

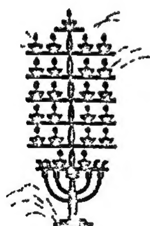


श्री जैन श्वेताम्बर संघ जवाहर नगर, जयपुर सम्पूर्ण जैन समाज को एक ही स्थान पर पूजा, अर्चना, साधना, सामायिक, स्वाध्याय उपासना, आराधना की पृष्ठ भूमि तैयार कर जैन एकता का जो संस्कार मूलक वातावरण निर्माण कर रहा है, वह वर्तमान युग की आवश्यकता तो है ही, आने वाली पीढी की अनिवार्यता भी है। हम जैन के नाम पर एकत्व की अनुभूति करें और एक साथ बैठकर सामायिक स्वाध्याय करे तो सचमुच ही हमारे हृदय एक सूत्र में बंध सकेंगे।

श्री जैन श्वेताम्बर संघ की एकत्व मूलक दृष्टि और कार्य विधि आज समस्त नगरो, महानगरो के जैन समाज के लिये आदर्श है। सम्प्रेरक है। मैं हृदय से कामना करता हूं कि भगवान महावीर का समताप्रधान जैन संघ, "समत्व" को जीवन व्यापी बनायें और एकत्व को राष्ट्रीय शक्ति के रूप में प्रस्तुत करें। भविष्य की अनेक शुभ सभावनाओं की अपेक्षा के साथ!

श्री चन्द सुराना 'सरस'
लेखक, सम्पादक, पत्रकार
आगरा

सम्प्रदाय को एक जुट करने में अग्रसर



मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि श्री जैन श्वेताम्बर संघ, जवाहर नगर, जयपुर अपनी स्मारिका का तीसरा अंक प्रकाशित कर रहा है। मुझे यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि जैन श्वेताम्बर संघ के अन्तर्गत इस केन्द्र में जैन श्वेताम्बर मतावलम्बियो के विभिन्न सम्प्रदाय अपने-अपने तरीके से पूजा अर्चना, सामयिक, स्वाध्याय करते है। मैं आशा करता हू कि संघ जैन सम्प्रदाय को एकजुट करने में अपने प्रयत्नो मे अग्रसर होता रहेगा।

मैं संघ के प्रयासो की सफलता की कामना करता हू।

चन्दनमल बैद
सदस्य
राजस्थान विधान सभा

सम्पादकीय



जैन धर्म विश्व के प्राचीनतम धर्मों में से है। प्रकृति के नियमों के अनुसार इसके सिद्धान्त विकसित हुए हैं। जैन परम्परा में आत्मा के स्वभाव को ही धर्म कहा गया है। आत्मा का स्वभाव है—क्षमा, विनय, सारल्य, सन्तोष, सहिष्णुता, करुणा आदि। इन सद्वृत्तियों को विकसित करने के लिए ही धर्म की साधना है। जैन शास्त्रों में यह भी कहा गया है कि सरलता और शुद्धता में ही धर्म टिकता है। पर विडम्बना यह है कि विज्ञान और तकनीकी विकास के साथ-साथ जीवनयापन की सुख-सुविधाएँ तो बढ़ी हैं, कला-कौशल, वाणिज्य-व्यवसाय और रहन-सहन के तौर-तरीकों में युगान्तरकारी परिवर्तन आया है। वस्तु और पदार्थ की गुणवत्ता को निखारने में आज की तकनीक लगी हुई है। पर आत्मा का स्वभाव प्रदूषित न हो, विकार और विभावग्रस्त न हो, इस दिशा में कोई सार्वजनीन तकनीक विकसित नहीं हो पाई है। परिणामस्वरूप मनुष्य शारीरिक दृष्टि से इन्द्रिय-स्तर पर सुखानुभूति भले ही करता हो, पर आत्मिक दृष्टि से मानसिक स्तर पर वह कुण्ठित, निराश, हताश और तनावग्रस्त है। वस्तु की गुणवत्ता को निखारने में तो वह दिन-रात एक किये जा रहा है, पर व्यक्तित्व की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए उसके पास कोई दृष्टि और योजनाबद्ध कार्यक्रम नहीं है।

धर्मशास्त्रों में मनुष्य जीवन को 'दुर्लभ' कहा गया है। पर आज बढ़ती हुई जनसंख्या के विस्फोट ने मनुष्य जीवन की 'दुर्लभता' पर प्रश्न-चिह्न लगा दिया है। अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री और अन्य जैविक वैज्ञानिक मनुष्य की जन्म-दर को नियन्त्रित कर जनसंख्या को कम करने में अपने ज्ञान और कौशल का उपयोग कर रहे हैं। पर यह निरन्तर बढ़ती जा

आज यह दिव्यता सुषुप्त है। दैहिकता मे ही मनुष्य उलझा हुआ है। उसे आडम्बर प्रिय है, आत्मीयता नही। उसने पदार्थ-ज्ञान के क्षेत्र मे विस्फोटक स्थिति पैदा कर दी है, पर आत्म-ज्ञान से वह शून्य होता जा रहा है। स्थिति इतनी भयावह और विकट बन गई है कि मनुष्य की स्वार्थलिप्सा ने उसे उपभोक्ता सस्कृति का दास बनाकर उसकी सवेदनाओ को कुण्ठित कर दिया है। उसकी लोभ, सग्रह और भोगवृत्ति के अतिरेक ने पृथ्वी, जल, वायु सम्बन्धी बाह्य पर्यावरण को ही प्रदूषित नही किया है वरन् उसके अन्तर मे निहित धैर्य, तितिक्षा, प्रेम, दया, करुणा जैसी आतरिक सद्वृत्तियो को भी जड बना दिया है। वह सवेदनारहित और क्रूर बन गया है। उसका तथाकथित ज्ञान अहिंसा, सयम और तप से न जुडकर हिंसा, भय, आतक, शोषण, उत्पीडन का वाहक बन गया है। परिणामस्वरूप मनुष्य बाहरी चमक-दमक, आडम्बर-प्रदर्शन, नीति-नियमो आदि मे तो महान् बनने का दिखावा करता है, पर आतरिक रूप मे वह अपने आपमे बौना और भावशून्य होकर रह गया है।

महानगरीय सभ्यता के विकास, औद्योगीकरण, बढती हुई जनसख्या के दबाव और आर्थिक तगी के कारण आज सयुक्त परिवार छिन्न-भिन्न हो रहे है। परिवार बालक की प्रथम पाठशाला कहे गये है। यहाँ बालको को जीवन की गुणवत्ता पनपाने के सस्कार मिलते है। स्नेह, सद्भाव, सहयोग, सहनशीलता, आत्मानुशासन जैसे गुणो का विकास परिवारो से ही मिलता है। परिवारो के विघटित होने के कारण आज का व्यक्ति बचपन से ही उच्छृङ्खल, चिडाचिडा, स्वार्थी, सवेदन-शून्य और आक्रामक देखा जाता है। यही नही, वह एकाकी, उदासीन, विक्षिप्त और नानाविध दबावो से ग्रस्त रहता है। इन परिस्थितियो मे उसका लालन पालन होते रहने से उसमे मानवीय सद्वृत्तियो का पूर्ण विकास नहीं हो पाता और वह भारी भीड मे भी अपने को अकेला पाता है। उपभोग्य सामग्रियो से भरे-पूरे भण्डारो मे भी वह अपने को अतृप्त और असन्तुष्ट महसूस करता है। इस विकृत विषम स्थिति से त्राण पाने के लिए कभी वह सस्ती मनो-रजकता प्रदान करने वाले क्लबो की शरण लेता है तो कभी मादक द्रव्यो के सेवन का शिकार हो जाता है। इस मायावी ससार मे भटकते-भटकते उसका दुर्लभ मानव जीवन निरर्थक और निस्सार बन जाता है। अपने आपसे उसे घृणा होने लगती है और उसका हीरे सा अनमोल जीवन दो कोडी का भी नही रहता।

यह स्थिति आज किसी एक देश तक सीमित न होकर सम्पूर्ण विश्व की बन गई है। इसका निस्तारण सही अर्थों मे वास्तविक धर्म के

पालन में है। यहां धर्म का अर्थ किसी मत या सम्प्रदाय से न होकर उन आदर्शों और सद्कर्तव्यों से है जिनसे आत्म-कल्याण के साथ-साथ लोक-कल्याण होता है। जैन धर्म आदर्श नागरिक के कर्तव्यों की विवेकपूर्ण परिपालना पर बल देता है। उसका बल अहिंसा, सत्य, अस्तेय, इन्द्रिय-संयम और इच्छा-नियन्त्रण पर है। भगवान् महावीर ने लगभग साढे बारह वर्षों की कठोर तपस्या और मौन साधना के बाद जो उपदेश दिया, उसका सार यही है कि प्राणी मात्र को आत्मतुल्य समझो, किसी को भी मनसा, वाचा, कर्मणा दुःख न दो, सन्ताप न दो, सबसे प्रेम करो। दुखियों की सेवा करो और दुराग्रही मत बनो। विविधता में एकता के दर्शन करो।

भगवान् महावीर को हुए आज ढाई हजार वर्षों से अधिक समय हो गया है, फिर भी जैन धर्म, जिसे उन्होने 'श्रमण धर्म', 'निर्ग्रन्थ धर्म' और 'अर्हत् धर्म' कहा है, वह आज भी अनवरत रूप से चला आ रहा है। इस अनवरतता का एक प्रमुख कारण है भगवान महावीर द्वारा चतुर्विध संघ की स्थापना। उसके अंग है—साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका। धर्म को संघबद्ध करने के कारण, भले ही जिनशासन में कई उतार-चढाव आये, गण-गच्छ-भेद बने, पर वह विलुप्त नहीं हुआ। उसकी विकास-यात्रा बराबर चलती रही। धर्म की इस जीवन्तता का बहुत कुछ श्रेय संघ को है। 'नन्दीसूत्र' में संघ की स्तुति करते हुए उसे नगर, रथ, चक्र, कमल, सूर्य, चन्द्र, पर्वत और समुद्र से उपमित किया गया है। संघबद्ध होने से व्यक्ति को अपनी आस्था का केन्द्र मिल जाता है, वह अकेला नहीं रहता। उसकी समष्टिगत चित्तवृत्ति को फलने-फूलने का उचित अवसर मिल जाता है। आज के विघटित होते हुए परिवार और समाज में ऐसे धर्म संघों की महती आवश्यकता है।

श्री जैन श्वेताम्बर संघ, जवाहर नगर, जयपुर महानगर का एक विशिष्ट संघ है, जो धार्मिक एकता, सामाजिक सौहार्द और आत्मिक उत्थान के लिए समर्पित है। यहां 'महावीर-साधना केन्द्र' के रूप में जो धर्मस्थली विकसित की जा रही है उसमें साकार-निराकार-उपासना और ज्ञान-भक्ति की आराधना के लिए समान सुविधाएं और अवसर प्राप्त हैं। एक ओर जिनेश्वर मन्दिर का निर्माण किया जा रहा है तो दूसरी ओर सामायिक-स्वाध्याय, दया-पौषध आदि के लिए स्थानक भी बन रहा है। [illegible] के सर्वांगीण विकास के लिए महावीर उद्यान भी विकसित किया जा रहा है। धार्मिक, सामाजिक, नैतिक आदि प्रवृत्तियों को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए और समाज के विभिन्न वर्गों को [illegible] रूप से जोड़ने के लिए संघ के [illegible] प्रकोष्ठ' और [illegible] प्रकोष्ठ' भी सक्रिय हैं। साहित्यिक [illegible] और [illegible]

सहिष्णुता को सघ अपने कार्यक्रमो के माध्यम से मूर्त रूप देता रहा है। विभिन्न धर्मों के आचार्यों, मुनियो, साध्वियो, श्रावको, श्राविकाओ के लिए सघ का द्वार सदा खुला हुआ है। यहाँ की साधना-स्थली पर सबका स्वागत है।

'कैवल्य' स्मारिका का यह तृतीय अक पाठको के हाथो मे सौपते हुए हमे परम प्रसन्नता है। इसमे जैन धर्म दर्शन सस्कृति, इतिहास एव कला से सम्बन्धित रचनाएँ प्रकाशित की गई है, साथ ही श्री जैन श्वे० सघ, जवाहर नगर के सदस्यो की पारिवारिक परिचय-झाकी भी विस्तार से दी गई है, जिसका सामाजिक-सौहार्द्र-भाव विकसित करने मे अपना विशेष महत्त्व है। पृष्ठो की सीमा क कारण कई रचनाएँ प्रकाशित होने से रह गई हैं। इसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं। स्मारिका को उपयोगी एव समृद्ध बनाने मे प्रमुख जैन आचार्यों, मुनियो, साध्वियो, विद्वान् लेखको और विज्ञापनदाताओ से उदारतापूर्वक जो सहयोग मिला है, उन सबके प्रति हम हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

सघ के पदाधिकारियो, सम्पादक मण्डल तथा विज्ञापन मण्डल के सभी सदस्यो का मैं अनुगृहीत हू कि उन्होने मुझे स्मारिका के साथ जुड़ने का न केवल अवसर दिया, वरन् हर सम्भव सहयोग भी प्रदान किया। उनके सहयोग एव मार्गदर्शन के कारण ही स्मारिका मूर्त रूप ले सकी है।

स्मारिका के सम्बन्ध मे आप सबकी सम्मति व सुझाव आमन्त्रित है।

—डॉ० नरेन्द्र भानावत
सम्पादक



प्रतिष्ठाचार्य पूज्य श्री मणिप्रभ सागरजी म. सा. की कलम से

अभी-अभी मुझे जवाहर नगर से सूचना मिली कि वे एक स्मारिका का प्रकाशन कर रहे हैं और मुझे लेख भेजना है वैसे मैं लेख के लिए कम ही समय निकाल पा रहा हूं क्योंकि विहार की स्थिति दीर्घ समय से चल रही है परन्तु जवाहर नगर के समाज के आग्रह भरे अनुरोध को टालने का साहस भी नहीं कर पा रहा हूं और [illegible] स्वतः ही भावनाएं शब्दों की बाहों में बंधने लग गई।

जयपुर में मेरा चातुर्मास चल रहा था और उस अवधि में मुझे जयपुर के उप-नगर जवाहर नगर के श्रावकों से परिचित होने का अवसर भी मिला। मैं उनके अनूठे समन्वय सुरुचिसम्पन्न विचारों की गम्भीरता और कार्य-क्षमता से प्रभावित हुआ और संयोग ऐसा बना कि इन सभी गुणों को मैंने उनसे साकार होते हुए भी देखा।

जवाहर नगर की अनमोल और अनुकरणीय है समन्वय-धारा जिसके अन्तर्गत सम्पूर्ण समाज एक धागे में पिरोया हुआ है। वहां न गच्छवाद की विकृति पनपी और न सत्ता या पद प्राप्ति की लालसा। सभी अपनी-अपनी परम्परा के अनुरूप धार्मिक और आध्यात्मिक शैली अपनाते हुए एक दूसरे से परस्पर पूर्ण प्रेम भरा व्यवहार करते हैं और यही उनकी अपूर्व सम्पत्ति है। [illegible] और [illegible] मन्दिर का निर्माण कराया है (जिसमें मन्दिर [illegible] में मूर्ति [illegible] के विशाल प्रांगण में प्रतिष्ठित हो [illegible] निर्माणाधीन है।

जो मैंने प्रवेश में देखा उसकी तो मुझे कल्पना भी नहीं थी। ऐसा लग रहा था कि जवाहर नगर का प्रत्येक वर्ग इस आयोजन पर उल्लसित ही नहीं है कार्य के प्रति निष्ठा और लगन में मग्न भी।

चारों ओर सभी कोई कार्य में व्यस्त ही दिख रहे थे। लगता था यह प्रतिष्ठा [illegible] में दादागुरु की नहीं उनकी अपनी कार्य क्षमता और गुरुदेव के प्रति अटूट आस्था की रोम-रोम में अभिव्यक्ति है।

उनकी लगन, उनके व्यवस्थित आयोजन से मैं भी अभिभूत था और इस प्रवेश समारोह से तो मैंने जिसे एक सामान्य सा आयोजन ही समझा था विशिष्ट समझते हुए अपूर्व की कल्पना करली।

कहीं कोई विसंवाद या मतभेद की हल्की सी खरोंच भी नजर नहीं आ रही थी। मुझे भी उनके साथ कार्य करते हुए अनिर्वचनीय आनन्द आ रहा था क्योंकि सारे युवा कार्यकर्ता रूढ़िवाद या परम्परावाद के न तो पोषक थे न खिलाफ। उचित प्रस्ताव चाहे वह परम्परा के खिलाफ होता परन्तु धर्म और जनोपयोगी होता तो स्वीकार करते और युवा हृदय होते हुए भी उचित परम्परा के प्रति पूर्ण निष्ठा सम्पन्न भी।

आज अनेकों स्थान पर परिभ्रमण करते हुए पाते हैं कि धर्म का मर्म और उसकी आचारनिष्ठा दिन-प्रतिदिन क्षीण होती जा रही है पर जब बात पद या सत्ता की आती है तो अपने आप को समाज के प्रथम स्थान पर खड़े कर लेते हैं दूसरी ओर गच्छ निष्ठा तो न्यून हो जाती है पर गच्छवाद बढ़ जाता है। मैं गच्छ निष्ठा बुरी नहीं मानता क्योंकि यह जीवन का एक सकारात्मक पहलू है पर मैं गच्छवाद को समस्त बुराइयों की जड़ मानता हूं। आज हम गच्छनिष्ठा और गच्छवाद की भेद रेखा को भूलकर इन दोनों को एक समझ लेते हैं मैं इस भेद को स्पष्ट करना चाहता हूँ ताकि पनपती विषबेल को उखाड़ सके और समाज को नयी दिशा प्रदान करके उसे सजीव, सक्रिय और धर्ममय बना सके।

गच्छनिष्ठा से तात्पर्य है अनेकों विचारधारा और आचार-परम्परा की विधि का सम्मान करते हुए अपनी पूर्व परम्परा से चली आ रही आचार-पद्धति के प्रति समर्पण और गच्छवाद का अर्थ है मात्र अपनी मान्यता का पोषण करते हुए अन्य की आचारपद्धति की आलोचना। प्रथम मान्यता स्याद्वाद का पोषण करती है दूसरी मान्यता एकान्तवाद का। महावीर का उदय स्याद्वाद के पोषक के रूप में और एकान्तवाद की मान्यता के विरोध में हुआ था और आज समाज में वैचारिक चिंतन का कैसा अंधेरा आ गया जिसके चलते महावीर के सिद्धान्त ही खण्ड खण्ड हो गए।

इन्तजार की घड़िया समाप्त हुई प्रतिष्ठा का दिन भी आ पहुँचा। दादा गुरुदेव की भव्य और विराट् प्रतिमा जैसे साक्षात् आशीर्वाद की मुद्रा मे अभिवृष्टि कर रही थी। उस प्रतिमा को इस कलात्मकता से निखारा गया था कि वह गुरुदेव की उग्र और उनके व्यक्तित्व का स्पष्ट प्रतिनिधित्व करती थी। प्रतिमा का आकर्षण अनूठा था उसकी भव्यता और कलात्मकता हजारो-हजारो हृदयो को श्रद्धामय बना रही थी।

निर्धारित समय मे सम्पूर्ण विधिविधान और पवित्र अनुष्ठानो सहित उस प्रतिमा को स्थापित किया गया और उस क्षण ऐसी तीव्र अनुभूति हुई कि आज यह प्रतिमा इस स्थान पर नही हजारो लाखो हृदय सिंहासनो पर अधिष्ठित हुई है साथ ही प्रस्तुत प्रतिष्ठा समारोह मेरे लिए एक विशिष्ट और गहरी अनुभूति के साथ सर्वदा के लिए स्मृति का अनमोल उपहार बन गया।

आज भी जवाहर नगर की साम्प्रदायिक एकता और गुणात्मक आत्मीयता हजारो किलोमीटर की दूरी से भी मुझे भावाभिभूत करती है।

गुरुदेव उनके संघ समाज को निरन्तर आध्यात्मिक सम्बल प्रदान करते हुए उनकी भावनात्मक एकता को निरन्तर बढाते रहे।

इन्ही शुभाशाओ के साथ!





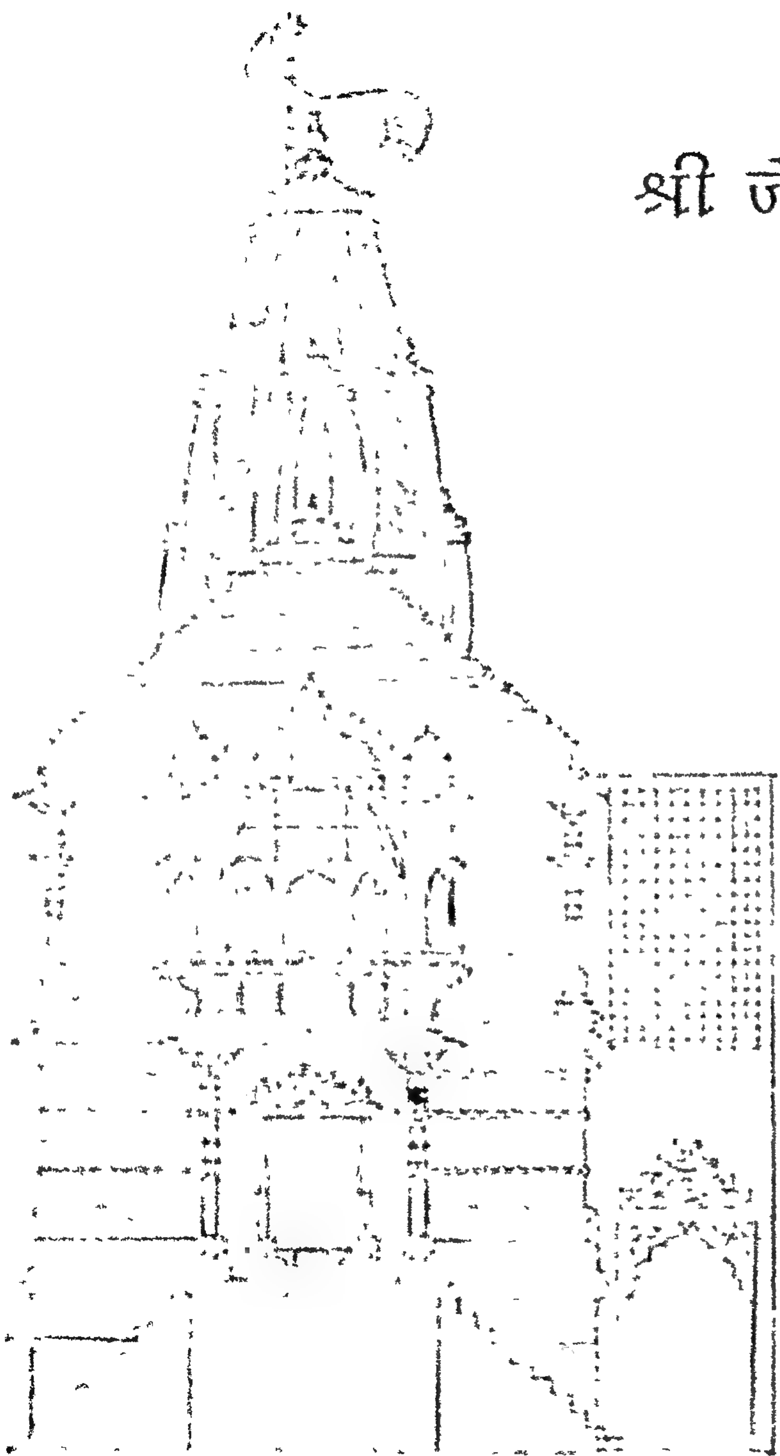
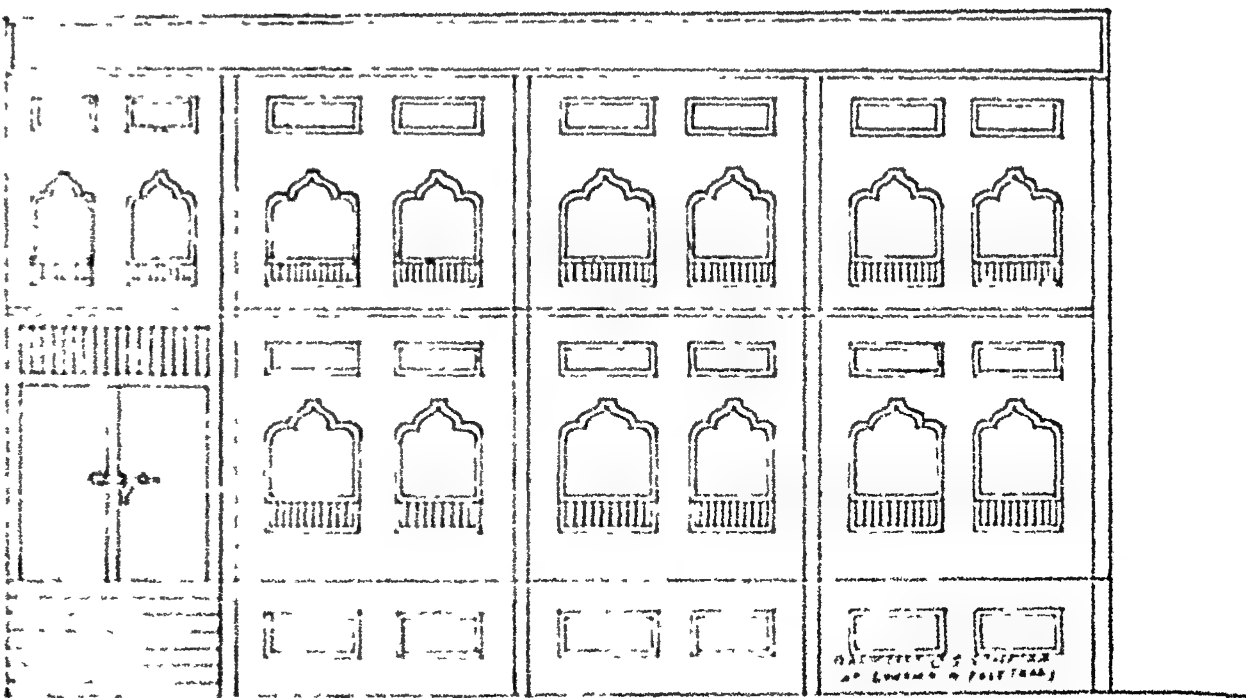
प्रस्तावित निर्माणाधीन योजना

- भगवान महावीर का शिखरबन्द मन्दिर
- स्थानक
- पुस्तकालय
- औषधालय
- भोजनशाला
- आयम्बिलशाला
- ऊपरी भाग में यात्रियों के ठहरने के लिए कमरे
- महावीर उद्यान का विकास
- सामुदायिक भवन का निर्माण
- [illegible]

श्री जैन श्वेताम्बर संघ, जवाहर नगर, जयपुर

का

निर्माणाधीन 'महावीर साधना केन्द्र'

श्रद्धांजलि



प्रिय स्व पकज सिघवी I A S (चयनित)

आप सभी की सवेदना एव सहानुभूति के लिए
हम हृदय से आभारी है।

धनपतराज मेहता — सवाईसिह सिघवी

□ उत्तम आनन्द डेरी एन्टरप्राइजेज

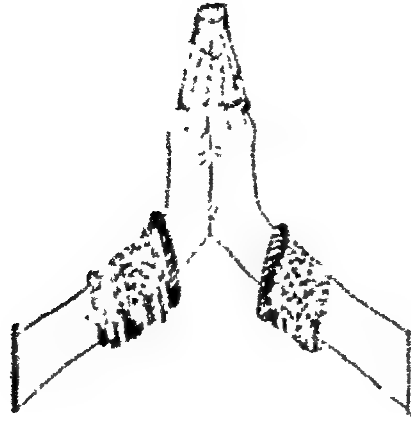
□□ आनन्द एजेन्सी

□□□ उत्तम आनन्द एक्सपोर्टस्

□□□□ आनन्द मोटर्स

D-35 पत्रकार कॉलोनी राजापार्क, जयपुर–302 004

ग्राम "अभिलाषा" जयपुर — फोन 40726, 43163, 515489



वन्दना

अरिहन्तों को नमस्कार
श्री सिद्धों को नमस्कार
आचार्यों को नमस्कार
उपाध्यायों को नमस्कार
जग में जितने साधुगण हैं
मैं सबको वन्दूं बार-बार। अरिहन्तों को……

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन ओऽऽऽऽ
सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय।
चन्द्र पुहुप शीतल श्रेयांस नमि
वासुपूज्य पूजित सुरराय॥

विमल अनन्त धर्म जस उज्ज्वलऽऽऽऽ
शान्ति कुन्थु अर मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्वप्रभु
वर्धमान पद पुष्प चढ़ाय॥
तीर्थेशों के चरण कमल में

मेरा वन्दन बार-बार। अरिहन्तों को……

जिसने रागद्वेष–कामादि जीतेऽऽ, सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्षमार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया॥
बुद्ध वीर जिन हरि हर ब्रह्माऽऽ या पैगम्बर हो अवतार।
उसके चरण कमल में मेरा, वन्दन होवे बार-बार॥
अरिहन्तों को……

श्री जैन श्वेताम्बर संघ, जवाहर नगर, जयपुर



प्रतिवेदन

(वर्ष 1989-92)

जवाहर नगर, जयपुर गुलाबी नगरी जयपुर का एक उप नगर है जिसमे लगभग तीन सौ जैन श्वेताम्बर परिवार हैं । सभी परिवार सम्प्रदाय की सकीर्ण भावनाओ से ऊपर उठकर महावीर साधना केन्द्र पर आयोजित धार्मिक, आध्यात्मिक एव सामाजिक कार्यक्रमो मे सक्रिय रूप से भाग लेते रहते है ।

श्री जैन श्वेताम्बर सघ सोसायटीज एक्ट के अन्तर्गत पजीकृत सस्था है जिसकी स्थापना 5 अप्रेल, 1981 को की गयी है । गत 11 वर्षो से यह सघ धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक आदि विविध क्षेत्रो मे महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है । सघ की प्रवृत्तियो के सचालन हेतु जवाहर नगर के सेक्टर 4 मे आवासन मण्डल से 1530 वर्ग मीटर भूखण्ड 3 85 लाख रुपये के मूल्य पर लिया गया था । यह राशि जवाहर नगर मे निवास कर रहे परिवारो ने ही एकत्रित करके दी थी ।

इस विस्तृत भूखण्ड पर प्रथम चरण मे दादावाडी तथा प्रवचन हाल तैयार कराया गया जिसमे सघ की विविध प्रवृत्तियो का सचालन किया जा रहा है । द्वितीय चरण मे स्थानक के कमरो का निर्माण कराया गया है । यहां 3 शिखर का भगवान महावीर का मन्दिर भी निर्मित किया जा रहा है जिसकी ऊँचाई करीब 16 फीट हो गयी है । इसी चरण मे 4600 वर्ग मीटर क्षेत्रफल मे महावीर उद्यान भी विकसित किया जा रहा है ।

आगामी चरण मे ऊपरी तल पर स्थानक का हाल, मन्दिर का निर्माण, भोजनशाला, आयम्बिलशाला तथा ठहरने के लिए कमरो का निर्माण, औषधालय एव पुस्तकालय आदि निर्माण प्रस्तावित हैं जो सघ के वित्तीय ससाधनो पर निर्भर करेगा । जैसे-जैसे उक्त कार्यों के लिए धन राशि एकत्र होती रहेगी, उसी के अनुसार निर्माण कार्य करा दिया जायेगा ।

सघ के विधान के अनुसार 23 जुलाई, 1989 की साधारण सभा मे वर्तमान कार्यकारिणी का चुनाव किया गया । कार्यकारिणी के सदस्य इस प्रकार है—

वर्तमान कार्यकारिणी :—

1. श्री उमरावचन्द सचेती, अध्यक्ष
2. श्री सुधीन्द्र गेमावत, उपाध्यक्ष
3. श्री सुरेन्द्र पोखरना, महामंत्री
4. श्री उत्तमचन्द जैन, संयुक्त मंत्री
5. श्री दौलतचन्द चपलावत, कोषाध्यक्ष
6. श्री राजेन्द्रकुमार पंसारी, सांस्कृतिक मंत्री
7. डॉ. संजीव भानावत, शिक्षा एवं साहित्य मंत्री
8. श्री फतेहसिंह बरड़िया, निर्माण मंत्री
9. श्री सुरेन्द्रकुमार जैन, निदे., युवा प्रकोष्ठ
10. श्री प्रेमचन्द जैन, पूर्व अध्यक्ष (पदेन)
11. श्री जीतेन्द्र मूथा, अध्यक्ष, युवा प्रकोष्ठ
12. श्रीमती पद्मा चपलावत, अध्यक्षा महिला प्रकोष्ठ

13. श्री शेरसिंह जैन, सदस्य
14. श्री सुशीलचन्द सिंघी, सदस्य
15. डॉ. पदमचन्द मुणोत, सदस्य
16. डॉ. डूंगरसिंह जैन, सदस्य
17. श्री [illegible]राज मेहता, सदस्य
18. श्री हेमचन्द [illegible], सदस्य
19. श्री राजेन्द्रकुमार पटवा, सदस्य
20. श्री [illegible] मेहता, सदस्य
21. श्री के. के. मेहता, सदस्य
22. श्री राजेन्द्रकुमार मेहता, सदस्य
23. श्री [illegible], सदस्य
24. श्री सुरेन्द्रकुमार [illegible], सदस्य
25. श्री [illegible], विशेष आमंत्रित
26. श्री [illegible], विशेष आमंत्रित

युवा प्रकोष्ठ तथा महिला प्रकोष्ठ इस संघ के घटक हैं तथा वर्तमान में युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष श्री जितेन्द्र मूथा तथा मंत्री श्री विनोद सचेती हैं। युवा प्रकोष्ठ के परामर्श-दाता कार्यकारिणी समिति के सदस्य श्री सुरेन्द्रकुमार जैन (ओसवाल सोप) हैं। महिला प्रकोष्ठ की वर्तमान अध्यक्षा श्रीमती पद्मा चपलावत तथा मंत्री निर्मला लोढा है।

युवा प्रकोष्ठ के 89-90 में अध्यक्ष श्री प्रवीण लोढा तथा मंत्री श्री जितेन्द्र मूथा व सत्र 90-91 मे अध्यक्ष श्री सुनील मुणोत तथा मंत्री श्री संजय पंसारी रहे। इसी प्रकार सत्र 89-90 में महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्षा श्रीमती पार्श्वकुमारी कोठारी व मंत्री श्रीमती अनु भण्डारी व 90-91 में अध्यक्षा श्रीमती सुशीला जैन तथा मंत्री श्रीमती निर्मला सचेती रही।

1989-90, 1990-91 व 1991-92 मे सम्पन्न हुए कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :—

भूमि पूजन अर्थात् खनन् मुहूर्त 23-7-89 तथा शिलान्यास 25-8-89 के फलस्वरूप 8 फरवरी, 90 गुरुवार माघ सुदी तेरस को प्रज्ञा पुरुष, आचार्य भगवन्त पूज्य श्री जिन कांतिसागर सूरीश्वरजी महाराज के प्रधान शिष्य गणिवर्य मणिप्रभ सागरजी की निश्रा में अठाई महोत्सव के रूप में 61" की [illegible] वाली प्रतिमा दादावाड़ी में [illegible] गुरुदेव मणिधारी श्री जिन चन्द्रसूरिजी महाराज की प्रतिष्ठापित करवाई तथा साथ ही 21" बैठी हुई श्री जिनदत्त सूरिजी व श्री जिन कुशल सूरिजी महाराज [illegible] श्री [illegible] भैरवजी की प्रतिमा [illegible]

मे लाई गई प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवाई गई। इस दिन जल यात्रा निकाली गई तथा स्वामी वात्सल्य किया गया।

दादा गुरुदेव की जन्म जयन्ती 27 अगस्त, 91 की पूर्व सध्या पर भक्ति सगीत का आयोजन किया गया। महावीर स्वामीजी के मन्दिर के मूल गम्भारे की नीव का प्रथम भट्ट 6-12-90 को श्रीमान् जीवनमलजी सा बोहरा द्वारा रखा गया।

29 व 30 जनवरी, 91 को दादाबाडी का प्रथम वार्षिकोत्सव आयोजित किया गया जिसे श्री मगनजी कोचर, बीकानेर तथा जैन नवयुवक मण्डल, जयपुर ने अपनी स्वर लहरियो से गुजायमान किया।

द्वितीय वार्षिक महोत्सव 18 फरवरी, 1992 को आयोजित किया गया जिसमे श्री मगन कोचर, बीकानेर तथा जैन नवयुवक मण्डल, जयपुर ने अपने मधुर भक्ति रस से परिपूर्ण भजनो से जन-समूह को भक्ति रस मे डुबो दिया।

महावीर साधना केन्द्र पर ही दस दिवसीय प्रेक्षाध्यान तथा योग साधना शिविर का आयोजन आचार्य तुलसी के अनुयायियो ने आयोजित किया।

होली एव दीपावली मिलन समारोह

सदा की भाति तीनो वर्ष ही होली एव दीपावली पर स्नेह मिलन के कार्यक्रम आयोजित किए गए। होली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमो मे आकाशवाणी के कलाकारो ने भी रगारग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। 1992 मे होली स्नेह मिलन कार्यक्रम मे प्रख्यात कवि श्री मेघराज मुकुल मुख्य अतिथि के रूप मे पधारे थे।

महावीर जयन्ती समारोह

श्री जैन श्वेताम्बर सघ की ओर से प्रति वर्ष महावीर जयन्ती समारोह अत्यन्त उत्साह व भक्ति-भाव से मनाया जाता है। सन् 1990 मे महावीर जयन्ती पर श्री शीतल मुनिजी म सा का प्रवचन, 1991 मे न्यायमूर्ति गुमानमल लोढा... पतचन्द सिघवी के मुख्य आतिथ्य एव डॉ रामचन्द्र द्विवेदी की अध्यक्षता मे भक्ति सध्या तथा 1992 मे श्री सज्जन श्रीजी म सा की स्मृति मे जैन भजन प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इस प्रतियोगिता का आयोजन श्री पुखराज-रत्ना लूनिया के सौजन्य से किया गया। जिसमे सामूहिक भजन मे श्री विजय मूसल व श्री अनिल श्रीमाल एव पार्टी ने शील्ड जीती। 1151 रु, का प्रथम पुरस्कार कु सुनीता श्रीमाली, 551 रु का द्वितीय पुरस्कार कु नीना मेहता, 251 रु का तृतीय पुरस्कार किशोर सेठिया तथा 151 रु का विशेष प्रोत्साहन पुरस्कार गौरव जैन को दिया गया। इस भक्ति सध्या मे प्रसिद्ध उद्योगपति श्री तेजराज भण्डारी मुख्य अतिथि थे तथा श्रुति मण्डल के अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्द सुराणा ने समारोह की अध्यक्षता की।

श्री विनयचन्द दौलतचन्द चपलावत (जैन पुस्तक मन्दिर, जयपुर) के सौजन्य से आयोजित अखिल राजस्थान अन्तर्महाविद्यालय निबन्ध प्रतियोगिता का 501 रु का प्रथम पुरस्कार राजकीय महाविद्यालय, बासवाडा के श्री चिन्मय भट्ट को, 251 रु का द्वितीय पुरस्कार बी एन कॉलेज, उदयपुर के श्री मुकेश नाहर को तथा 101 रु का तृतीय पुरस्कार मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर की कु सीमा पहूजा को दिया गया।

क्षमायाचना समारोह

क्षमायाचना समारोह हर वर्ष आयोजित

किए लेकिन गत वर्ष (1991) पर्यूषण पर्व पर सामायिक, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, प्रवचन तथा सामूहिक पारणा का आयोजन किया गया। पूजायें सम्पन्न कराई गई तथा रात्रि में भगवान एवं गुरुदेव की अंगरचनाएँ की गई।

विशेष प्रवचन

इन वर्षों में अनेक प्रमुख एवं शीर्षस्थ आचार्यों एवं साधु-साध्वी मण्डल के विशेष प्रवचन आयोजित किए गये :—

1. युग प्रधान अनुष्ठाता एवं अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी।
2. आचार्य सम्राट श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी म. सा.।
3. श्री जयानन्दजी म. सा. (सामूहिक भक्तामर पाठ)।
4. आचार्य नानेश के प्रखर शिष्य श्री विजय मुनिजी।
5. राष्ट्र सन्त स्व. अमर मुनिजी म. सा. (वीरायतन) के शिष्य ईश्वर मुनि एवं रंग मुनिजी।
6. गणिवर्य मणिप्रभ सागरजी म. सा.।
7. गणिवर्य श्री महिमाप्रभ सागरजी, महोपाध्याय ललितप्रभ सागरजी एवं महोपाध्याय चन्द्रप्रभ सागरजी म. सा.।
8. सज्जन श्रीजी म. सा. की प्रमुख शिष्या शशीप्रभा श्रीजी।
9. श्री कोमल मुनिजी म. सा.।
10. आचार्य सुदर्शन के शिष्य नरेश मुनि।
11. आचार्य आनन्द ऋषि के शिष्य रमेश मुनि।
12. विचक्षण श्री सज्जन श्रीजी म. सा. की शिष्या विनीता श्री चन्द्रकला श्रीजी, सुदर्शना श्रीजी एवं प्रियदर्शना श्रीजी।
13. साध्वी श्री पद्मलता श्रीजी, यशकीर्ति श्रीजी म. सा.।
14. आचार्या श्री चन्दना श्रीजी, विरायतन।
15. आचार्य तुलसी के सन्त सुमेर मुनिजी
16. आचार्य आनन्द ऋषीजी म. सा. की साध्वी रमेश कँवरजी एवं कन्चन कँवरजी।

विशेष आगन्तुक

1. कल्याणजी आनन्दजी पेढ़ी के अध्यक्ष श्री श्रेणिक भाई।
2. नाकोड़ा तीर्थ के अध्यक्ष श्री पारस-मलजी भंसाली।

साधारण सभा, स्वामी वात्सल्य, सामूहिक गोठ

वर्ष 1989 में पद्मपुराजी, वर्ष 1990 में (श्री नागोरीयान) पार्श्वनाथ मन्दिर एवं 1991 में बरखेड़ा जैन तीर्थ पर उक्त कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें युवा प्रकोष्ठ के कार्यक्रमों के साथ-साथ पुरस्कार भी वितरित किये गये।

धर्म यात्रायें :-

1. जयपुर-दिल्ली, मणिधारी [illegible]

श्री जिन चन्द्रसूरिजी के 849 वें जन्म-दिवस समारोह पर महरोली यात्रा ।

2 जोधपुर आचार्य श्री हस्तीमलजी म के दर्शनार्थ यात्रा ।

3 मालपुरा मे उपधान पर यात्रा की गई ।

सक्रान्ति समारोह एव स्वामी वात्सल्य —

आचार्य सम्राट विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी म सा के सानिध्य मे सक्रान्ति समारोह आयोजित किया गया तथा लगभग 2500 व्यक्तियो ने इसका लाभ लिया । बाहर से पधारने वालो की व्यवस्था भी की गई ।

गुणानुवाद सभा —

3 जून, 1992 को राष्ट्र सन्त उपाध्याय अमरमुनि के परलोक सिधार जाने पर उन्हे सार्वजनिक गुणानुवाद सभा मे श्रद्धाजलि अर्पित की गई । सान्निध्य मिला—साध्वी रमेशकँवरजी का ।

विविध कार्यक्रम —

1 शरद पूर्णिमा पर भक्ति सध्या का आयोजन ।

2 नये वर्ष पर सास्कृतिक कार्यक्रम ।

3 हर पूर्णिमा को रात्रि जागरण ।

4 प्रत्येक चतुर्दशी को प्रतिक्रमण ।

कैवल्य स्मारिका का यह तीसरा त्रि-वार्षिक अक प्रकाशित किया जा रहा है जिसमे जवाहर नगर मे निवास कर रहे श्री जैन श्वेताम्बर सघ के सदस्यो का पारिवारिक विवरण, आचार्यो एव विद्वानो के लेख, वर्ष 1989-90 व 1990 91 तक के सघ के अकेक्षित लेखे तथा वर्तमान कार्यकारिणी द्वारा आयोजित कार्यक्रम प्रकाशित किये जा रहे हैं ।

हम इस प्रतिवेदन के माध्यम से उन सभी सस्थाओ, दानदाताओ, विज्ञापनदाताओ के प्रति अपना आभार प्रदर्शित करते हैं जिन्होंने हमे समय-समय पर आर्थिक सहयोग दिया है । सभी आचार्यों तथा साधु-साध्वी मण्डल के प्रति आदर भावना प्रकट करते हैं जिन्होंने इस स्थान पर पधार कर ज्ञान बोध करवाया है, सस्थाओ के प्रतिनिधियो तथा सभी समाज के सदस्यो के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं जिन्होंने हमारे निमन्त्रण पर समय-समय पर पधार कर कार्यक्रमो को सफल बनाया है ।

उपरोक्त सभी गतिविधियाँ आप सभी के सहयोग, उपस्थिति तथा सम्बल से ही सम्भव हो पाई ह और आप सभी इस आध्यात्मिक यज्ञ के भागीदार है । अगर फिर भी कुछ कमिया रह गई हैं तो इसकी जिम्मेदारी हम अपनी मानते हुए पुन आप सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए समाज की नि स्वार्थ भाव से सेवा करते रहे, इसी आशा के साथ—

उमरावचन्द सचेती
अध्यक्ष

सुरेन्द्र पोखरना
महामन्त्री



श्रीसंघों एवं चेरीटेबल ट्रस्टों द्वारा संस्था को दिया गया आर्थिक सहयोग

राशि	नाम
3,00,001	श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ ट्रस्ट, नाकोड़ा
1,00,001	,, मोकलसर श्रीसंघ, मोकलसर
51,001	,, मंदिर श्री आदिनाथ श्वेताम्बर संघ, हाडेचा
31,001	,, जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, पेढ़ी, सांचोर
21,001	,, शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर, राजेन्द्र जैन ट्रस्ट, बम्बई
21,001	,, रुकमणी शंखेश्वर पार्श्वनाथ मन्दिर, पाली
21,001	,, जैन श्वेताम्बर श्री मन्दिर, रानीवाड़ा
15,001	,, जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, सिवाना
15,001	,, जवेरी फेमिली चेरीटेबिल ट्रस्ट, देहली
11,001	,, जोगीचन्द ज्ञानचन्द महता चेरीटेबिल ट्रस्ट, जयपुर
11,001	,, रतन चम्पा चेरीटेबिल ट्रस्ट, जयपुर
11,001	,, जोधाराम मिलापचन्द वेद चेरीटेबिल ट्रस्ट, जयपुर
11,001	,, तपागच्छ श्वेताम्बर मन्दिर, चौमुखी
11,001	,, जैन मन्दिर ट्रस्ट, मालीवाड़ा
11,001	,, चन्दाप्रभु महाराज जैन जूना मन्दिर, मद्रास
11,001	सेठ मोती शाह रिलीजियस एन्ड चेरीटेबिल ट्रस्ट, बम्बई
5,001	श्री अजितनाथ मन्दिर, सिरोही
5,001	सेठ कल्याणमलजी परमानन्दजी मन्दिर ट्रस्ट, सिरोही
5,001	श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ मन्दिर, पाली
5,101	,, उम्मेदपुरा श्रीसंघ, सिवाना
5,001	,, मोहनलाल गौतम महावीर चौधरी चेरीटेबिल ट्रस्ट, अहमदाबाद
5,001	,, मुनिसुव्रत स्वामी जैन श्वेताम्बर मन्दिर ट्रस्ट, कोल्हापुर
5,001	,, गौड़ी पार्श्वनाथ ट्रस्ट, सिरोही
5,001	,, पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर मन्दिर, [illegible]
5,001	,, जैन श्वेताम्बर आदिनाथ मन्दिर, मद्रास
5,001	,, जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, बैंगलोर
5,101	,, [illegible] कोठारी मैमोरियल ट्रस्ट, जयपुर
5,101	,, [illegible] फैमिली मैमोरियल ट्रस्ट, जयपुर
5,101	,, [illegible] चेरीटेबिल ट्रस्ट, जयपुर
5,101	,, [illegible] ट्रस्ट, सिरोही
5,101	,, [illegible] ट्रस्ट, जयपुर

श्री जैन श्वेताम्बर संघ, जवाहर नगर, जयपुर

दादावाड़ी के निर्माण मे सहयोग देने वाले भाग्यशालियों की नामावली

- दादावाड़ी का सम्पूर्ण हाल का निर्माण—
  स्वर्गीय श्री मागीलालजी पसारी एव स्व श्रीमती पुखराज देवी की स्मृति मे श्री पारसचन्दजी सुरेशचन्दजी जैन (पसारी) बम्बई वालो द्वारा
- मणीधारी श्री जिनचन्द्र सूरीश्वरजी की छत्री का निर्माण—
  स्व श्रीमती कश्मीरीबाई की स्मृति मे श्री अमरचन्दजी, मेहरचन्दजी, ज्ञानचन्दजी धाधिया जयपुर वालो द्वारा
- दादावाड़ी के सम्पूर्ण फर्श का निर्माण—
  स्व सेठ श्री महतावचन्दजी गोलेछा की स्मृति मे श्री राजेन्द्रकुमारजी, सुरेन्द्रकुमारजी गोलेछा जयपुर वालो द्वारा
- श्री जिनदत्त सूरीजी की छत्री का निर्माण—
  श्री ज्ञानचन्दजी सुनीलकुमारजी शैलेन्द्रकुमारजी सचेती, जयपुर वालो द्वारा
- श्री जिनकुशल सूरीजी की छत्री का निर्माण—
  स्व श्रीमती जतनबाई धर्मपत्नी श्री रतनचन्दजी के पुत्र श्री सुशीलचन्दजी अनिल कुमारजी काष्टिया जयपुर वालो द्वारा
- श्री नाकोडा भैरवजी की छत्री का निर्माण—
  श्री पारसमलजी भन्साली के पुत्र श्री प्रकाशराजजी भन्साली जोधपुर वालो द्वारा
- दादावाड़ी के प्रवेश द्वार का निर्माण—
  स्व श्री घूकलमलजी सा भण्डारी एव धर्मपत्नी श्रीमती पदमादेवी भण्डारी (अजमेर वालो) की स्मृति मे

स्थानक के कमरे एव दीर्घाओं आदि के निर्माण मे सहयोग प्रदान करने वाले महानुभाव

श्रीमती मुन्नीदेवी चपलावत	—जयपुर
श्री माणकराजजी मदनराजजी बोहरा	—बम्बई
श्रीमती अचरजबाई सचेती (अलवरवाले)	—जयपुर
श्री नथमलजी लोढा	—जयपुर
" जौहरीमलजी पटवा	—जयपुर
" विनयचन्दजी चोरडिया	—जयपुर
" जगदीशचन्दजी भन्साली	—जयपुर
" विनयचन्दजी दौलतचन्दजी चपलावत	—जयपुर

श्री जैन श्वेताम्बर संघ, जवाहर नगर, जयपुर

परम पू. प्राचार्य श्री जिनकान्ति सूरीश्वरजी म. सा. के प्रधान शिष्य प. पूज्य गुरुदेव
श्री मणिप्रभ सागरजी म. सा. के कर कमलों द्वारा

माघ सुदी 14, संवत् 2046, तदनुसार 8 फरवरी, 1990 को सम्पन्न हुई

प्रतिष्ठा

भाग्यशालियों की नामावली

- **मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरीश्वरजी की प्रतिष्ठा**
  श्री पारसचन्दजी सुरेशचन्दजी जैन, बम्बई
- **श्री जिनदत्त सूरीजी की प्रतिष्ठा**
  श्रीमती सोहनकंवर, श्रीमती निर्मला महता, जोधपुर
- **श्री जिन कुशल सूरीजी की प्रतिष्ठा**
  श्री निहालचन्दजी, श्रीपालजी, अमोलकचन्दजी महता, जोधपुर
- **श्री नाकोड़ा भैरवजी की प्रतिष्ठा**
  श्री भंवरलालजी, भीमराजजी, मोभराजजी बोहरा, बाड़मेर
- **मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरीश्वरजी की मूर्ति प्रदाता**
  श्री भैरूसिंहजी अरुणकुमारजी चौधरी, जयपुर
- **श्री जिनदत्त सूरीजी की मूर्ति प्रदाता**
  श्रीमती टीकमबाई धर्मपत्नी स्व. श्री घीसीलालजी गोलेछा, जयपुर
- **श्री जिनकुशल सूरीजी की मूर्ति प्रदाता**
  श्रीमती प्रेमकंवर श्रीश्रीमाल, धर्मपत्नी स्व. श्री हस्तीमलजी श्रीश्रीमाल, जयपुर
- **श्री नाकोड़ा भैरवजी की मूर्ति प्रदाता**
  श्री पारसमलजी प्रकाशमलजी भन्साली, जयपुर

गणिवर्य मणिप्रभ सागरजी म. सा. की निश्रा में
मणिधारी दादा गुरुदेव की प्रतिष्ठा पर
अन्य प्रमुख बोलियां लेने वाले महानुभाव

मुनीमजी	—श्री कीमतीलालजी मिलापचन्दजी जैन, जयपुर
तिलक लगाना	—श्री मानसिंहजी सुनीलकुमारजी श्रीमाल, जयपुर
माला पहनाना	—श्री ज्ञानचन्दजी करमचन्दजी फोफलिया, जयपुर
भगवान महावीर की वेदी विराजमान	—श्री भैरूदानजी हरकचन्दजी नाहटा, जयपुर
द्वार खुलवाना	—श्री अमरचन्दजी महरचन्दजी धाधिया, जयपुर
ध्वजा चढाना	—श्री हरकचन्दजी नाहटा, दिल्ली
कलश चढाना (दादा गुरुदेव)	—श्री धनपतमलजी राजेन्द्रकुमारजी पटवा, जयपुर
नाकोडा भैरव वेदी पर कलश चढाना	—श्री आशुलालजी डोसी, बाडमेर
झालर बजाना	—श्री उत्तमचन्दजी चपलावत
श्री जिनदत्त सूरीजी की प्रतिमा पर कलश चढाना	—श्री महेन्द्रकुमारजी गोलेछा
श्री जिनकुशल सूरीजी की प्रतिमा पर कलश चढाना	—श्री सौभागमलजी बोरदिया
दादा गुरुदेव की पक्षाल	—श्री कुशलचन्दजी विमलचन्दजी सुराना, जयपुर
दादा गुरुदेव को चन्दन व पुष्प चढाना	—श्री विमलचन्दजी पसारी, जयपुर
नाकोडा भैरूजी की पक्षाल	—श्री देवराजजी जितेन्द्रकुमारजी मूथा, जयपुर
नाकोडा भैरूजी को चन्दन व पुष्प	—श्री प्रकाशचन्दजी सुभापचन्दजी गोलेछा, जयपुर
दादा गुरुदेव की आरती	—श्री पन्नालालजी विजयकुमारजी बरडिया, जयपुर
मंगल दीया चारों जगह	—श्री बसन्तकुमारजी राजेन्द्रकुमारजी पुगलिया, जयपुर
नाकोडा भैरवजी की आरती	—श्री पारसमलजी भन्साली, जोधपुर
सवा लाख अखण्ड चावलों का सातिया	—श्री धनश्यामदासजी राजकुमारजी, दिल्ली

(उपरोक्त नामावली 3,000 रु एवं अधिक की बोली लेने वाले महानुभावों की है।)

संस्था को विशेष आर्थिक सहायता प्रदान करने वाले महानुभाव

श्री पारसचन्दजी सुरेशचन्दजी जैन (पंसारी), बम्बई

श्रीमती नेम कंवर श्रीश्रीमाल

श्री सरदारमलजी प्रेमचन्दजी छाजेड़, जयपुर

,, फतेहसिंहजी वरडिया, जयपुर

,, दौलतसिंहजी उमरावचन्दजी सचेती, जयपुर

,, इन्दरचन्दजी प्रकाशचन्दजी पदमचन्दजी सचेती, अजमेर

मैसर्स अशोका फाउन्ड्री एण्ड मैटल वर्क्स, जयपुर

श्रीमती सुमन गर्ग धर्मपत्नी श्री वी. के. गर्ग, जयपुर

मैसर्स एनाइट जेम्स कारपोरेशन, जयपुर

श्री उत्तमचन्दजी सेठिया, जयपुर

,, विमलचन्दजी सुराना, जयपुर

,, कमलचन्दजी सुराना, जयपुर

,, धर्मचन्दजी मेहता, जयपुर

,, भीमराजजी (गारमेंट एक्सपोर्ट), जयपुर

,, रिखबचन्दजी मुथा (शाह ट्रेडिंग कम्पनी), लंदन

,, प्रेमचन्दजी गोलेछा, जयपुर

,, गजेन्द्रकुमारजी जैन (पंसारी), जयपुर

डा. एन. एम. एवं [illegible] दूगड़, जयपुर

श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन, जयपुर

मैसर्स [illegible], जयपुर

श्री [illegible], जयपुर

,, [illegible] सेठिया, जयपुर

मैसर्स [illegible], जयपुर

इन्तजार की घड़ियां समाप्त हुई प्रतिष्ठा का दिन भी आ पहुंचा। दादा गुरुदेव की भव्य और विराट् प्रतिमा जैसे साक्षात् आशीर्वाद की मुद्रा मे अभिवृष्टि कर रही थी। उस प्रतिमा को इस कलात्मकता से निखारा गया था कि वह गुरुदेव की उस और उनके व्यक्तित्व का स्पष्ट प्रतिनिधित्व करती थी। प्रतिमा का आकर्षण अनूठा था उसकी भव्यता और कलात्मकता हजारो-हजारो हृदयो को श्रद्धामय बना रही थी।

निर्धारित समय मे सम्पूर्ण विधिविधान और पवित्र अनुष्ठानो सहित उस प्रतिमा को स्थापित किया गया और उस क्षण ऐसी तीव्र अनुभूति हुई कि आज यह प्रतिमा इस स्थान पर नही हजारो लाखो हृदय सिंहासनो पर अधिष्ठित हुई है साथ ही प्रस्तुत प्रतिष्ठा समारोह मेरे लिए एक विशिष्ट और गहरी अनुभूति के साथ सर्वदा के लिए स्मृति का अनमोल उपहार बन गया।

आज भी जवाहर नगर की साम्प्रदायिक एकता और गुणात्मक आत्मीयता हजारो किलमीटर की दूरी से भी मुझे भावाभिभूत करती है।

गुरुदेव उनके संघ समाज को निरन्तर आध्यात्मिक सम्बल प्रदान करते हुए उनकी भावनात्मक एकता को निरन्तर बढाते रहें।

इन्ही शुभाशाओ के साथ!





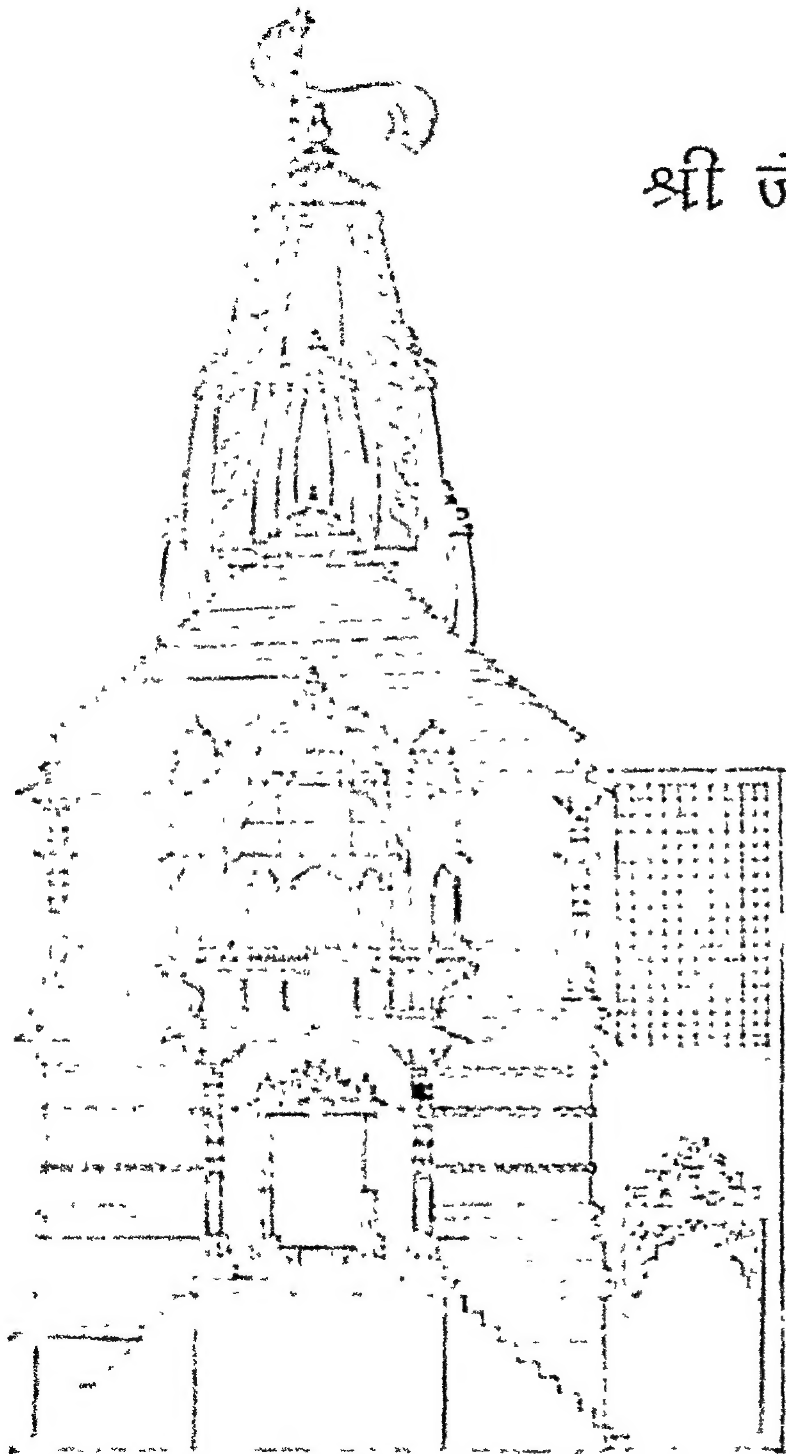
प्रस्तावित निर्माणाधीन योजना

- भगवान महावीर का शिखरबन्द मन्दिर
- स्थानक
- पुस्तकालय
- औषधालय
- भोजनशाला
- आयम्बिलशाला
- ऊपरी भाग में यात्रियों के ठहरने के लिए कमरे
- महावीर उद्यान का विकास
- सामुदायिक भवन का निर्माण
- लिफ्ट लगवाना

श्री जैन श्वेताम्बर संघ, जवाहर नगर, जयपुर

का

निर्माणाधीन 'महावीर साधना केन्द्र'



श्रद्धांजलि



प्रिय स्व पकज सिघवी I A S (चयनित)

आप सभी की सवेदना एव सहानुभूति के लिए
हम हृदय से आभारी है।

घनपतराज मेहता　　　　　　　　　　सवाईसिंह सिघवी

□ उत्तम आनन्द डेरी एन्टरप्राइजेज
□□ आनन्द एजेन्सी
□□□ उत्तम आनन्द एक्सपोर्टस्
□□□□ आनन्द मोटर्स

D-35 पत्रकार का॰ नी राजापार्क जयपुर–302 004

ग्राम "अभिलाषा जयपुर　　　　फोन 40726, 43163, 515489